जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
☎ : ०२० - २४२१५५८३, मो. : ८२६२०५६४८०
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५१ वे ❖ अंक ५ वा ❖ जानेवारी २०२० ❖ वीर संवत २५४६ ❖ विक्रम संवत २०७६

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● अंतिम महागाथा -		● आनंद श्रावक अध्ययन : विशेष नोंदी	६१
१३. अज्ञान को समता से सहना	१५	● मृत्यु को महोत्सव बनाएँ :	
१४. आत्म निर्भरता के सूत्र	१७	जीवन एक वृक्ष है	६४
● जनगणना - जैन बांधव जागृती अभियान	२१	● कभी अलविदा ना कहना...	६५
● आत्मध्यान - कैसे करें ध्यान ?	२३	● जागृत विचार	७१
● ऐसी हुई जब गुरु कृपा -		● कडवे बोल	७३
ओपमा कम लगाणी	२८	● दोन माणूस वेडे - टू इडियटस्	७४
● कडवे प्रवचन	२९	● नववर्ष के नव संकल्प	७५
● अन्तरंग शत्रुंजय : ६ वर्ष	३१	● एन्डोस्कोपी ऑन व्हिल्स् - उद्घाटन	७९
● कव्हर तपशिल	३२	● एक धैर्यशील योध्दा महात्मा गांधी -	
● जैन समाज गौरव - श्री. चकोरजी गांधी	३७	पुस्तक प्रकाशन	८०
● मित्रवर्ग की मर्यादा	४६	● पार्श्वनाथ युवक मंडळ, कासारवाडी	८२
● ईश्वर	४७	● भगवान महावीर सेवा धाम ट्रस्ट, कोल्हापूर	८२
● वाचाल तर वाचाल	४९	● वाचकांचे मनोगत	८३
● तुरंत जैन समाज के लिए आवश्यकता है	५०	● सूर्यदत्ता ग्रुप, पुणे	८४
● हास्य जागृति	५१	● आर. एम. धारीवाल फाऊंडेशन - शिष्यवृत्ती	८७

- आर. एम. धारीवाल फाऊंडेशन –मॅरेथॉन ८९
- झेप जीवनावर ९०
- भारत गौरव मुनिजी पुलकसागर ९१
- सफल होना है तो ९२
- नव वर्षाच्या उंबरठ्यावर ९५
- आनंदऋषिजी हॉस्पिटल, अहमदनगर ९७
- श्री. संजय बोरा, भोसरी ९७
- जैन महाभारत – खुली किताब प्रतियोगिता ९८
- श्रावक का गुण सौंदर्य – – खुली किताब प्रतियोगिता ९८
- आवरण उतार दो आग्रह के ९९
- अरिहंत जागृती मंच, पुणे १००
- गुरु आनंद तीर्थ, चिचोंडी – वर्षीतप १०१
- विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकीय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**
Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२–१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१, www.jainjagruti.in**
Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

❖ **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९११९४०९, ९४२२८३२८४९
❖ **पुणे शहर ❖ जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
❖ **पुणे शहर ❖ कुर्डुवाडी, बार्शी –** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
❖ **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
❖ **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५ / ९३७३६८२१३७
❖ **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
❖ **सदाशिव पेठ परिसर, पुणे –** सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
❖ **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
❖ **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
❖ **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
❖ **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
❖ **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६ / ७२७२९७२९९९
❖ **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
❖ **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
❖ **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
❖ **बीड –** श्री. महावीर पन्नालालजी लोढा, मो. ९४२०५५६३२५
❖ **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७–२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
❖ **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत–फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
❖ **मुंबई** खारघर– श्री. मदनलालजी गांधी–मो. ९८२०५३६७९३
❖ **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३–२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
❖ **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
❖ **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
❖ **श्रीरामपूर –**श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
❖ **बारामती–** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२–२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
❖ **अमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
❖ **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
❖ **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
❖ **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
❖ **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
❖ **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१–२६९५४३३
❖ **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

अंतिम महागाथा

लेखक : प्रबुध्द विचारक पू. श्री. आदर्शऋषिजी म.सा.

(क्रमशः –६)

भाग एक – राजकुमार वर्धमान

१३ – अज्ञान को समता से सहना

महावीर ध्यान मुद्रा में खडे आत्मयात्रा पर निकल गये है । उसी समय एक किसान अपने बैल लेकर उधर से ही घर लौट रहा है । अचानक उसे कुछ काम याद आया । उसने विचार किया इन बैलों को साथ में क्यों ले जाऊँ ? इन्हें यही छोड देना ठीक होगा । काम पूर्ण करके शीघ्र ही वापस आऊँगा, उस समय साथ में ले जाऊँगा । और ये सामने कोई खडा है उसे ध्यान रखने के लिये कह देता हूँ । वह ध्यान रखेगा ।

उसने जोर से आवाज दी, अरे भाई ! मेरे इन बैलों को संभालना । मैं कुछ आवश्यक कार्य से जा रहा हूँ, लौटते समय इन्हें ले जाऊँगा । इनपर जरा ध्यान रखना। इतना कहकर वह चल दिया ।

मनुष्य अपनी बात कहने के लिए उतावला होता है । अपनी ही सुनाना चाहता है । सामने वाले ने सुना है या नहीं उसकी पर्वा ही नहीं करता ।

महावीर क्या सुनते वे तो अंतर की सुनने में मग्न है। वे क्या ध्यान देते वे अपनी आत्मा की ओर ध्यान दे रहे है । वे बैलों को क्या संभाले, उन्होंने स्वंय को संभालना छोड दिया है ।

जिन्होंने राजमहल की तरफ भी कभी ध्यान नहीं दिया, उन्हें बैलों की ओर ध्यान देने के लिए कहा जा रहा है । कोई ऐसे भी होते है, जो हीरे–मोती छोड आते है और कंकरों में उलझ जाते है । घर, प्रियजन को छोड आते है पर दूसरे घर ढूँढते फिरते है । प्रियजन का मोह दूसरों में खोज लेते है । घर छोडते है पर राग–द्वेष, क्रोध–मद के कारागृह में स्वयं को बंदी बना लेते है ।

किसान बैलों को छोड चला गया । वे ठहरे पशु । बांधो तो बंध जाते है, छोड दो तो चले जाते है । वे एक स्थान पर कैसे रहते ? हाँ, पशु घूम–फिर कर पुनः अपने स्थानपर लौट आते है । बैल, वन में चरते–चरते थोडा दूर चले गये । किसान कुछ ही समय पश्चात् लौट आया । उसने आस–पास दृष्टि घुमाई । उसे बैल दिखाई नहीं दिये ।

उसने महावीर को लक्ष्य करके पूछा, ''अरे भाई, मेरे बैल कहाँ है ? वह दो–तीन बार पूछता है ।'' महावीर क्या उत्तर देते, वे वहाँ उपस्थित होते तब ना ? यह प्रश्न ही महावीर के लिये अर्थहीन है ।

किसान ने सोचा इसे सुनाई नहीं देता, लगता है बहरा है । वह बैलों को ढूँढने चल दिया, चलते–चलते दूर निकल गया । पश्चिम का यात्री कब का जा चुका था अपने पीछे घना अंधेरा छोडकर । किसान वन के अंधेरे में भटकता रहा । रास्ता भी पथरीला–कंटीला है। किसान ठोकरे खाते–खाते भटकते–भटकते थक गया । ढूँढनेपर भी बैल नहीं मिले तो मन क्रोधित हो गया। कमजोर को क्रोध जल्दी आता है । मन–मस्तिष्क से कमजोर शीघ्रकोपी होता है ।

इधर किसान के जाते ही बैल लौट आये थे । महावीर जिस वृक्ष की छाया में खडे है, वहाँ उनके पीछे आकर बैठ गये । वे मूक प्राणी भाग्यशाली थे कि उस रात वे महावीर का सान्निध्य पा गये । आदमी अंधेरे में भटकता रहा ।

सूर्योदय होते ही थकाहारा, भूख प्यास का मारा

किसान बैलों को खोजता हुआ वहाँ आता है जहाँ अभीतक महावीर ध्यान में खडे है । बैल एक तरफ बैठे हुये जुगाली कर रहे है । यह दृश्य देखकर वह क्रोध में उबल पडा । मस्तिष्क ने, धैर्य ने साथ छोड दिया । जुबान तलवार बन गई । मन में आये वही बकने लगा । ''अरे ! पाखंडी, तूने ही मेरे बैल चुराये, छिपा दिये। मैं रात भर जंगल में ढूँढता रहा, भटकता रहा, भूख प्यास के मारे मरा जा रहा हूँ और तू बैल छिपाये चुप खडा है । जबाब नहीं देता । ठहर ! इसकी सजा तुझे अभी देता हूँ।'' अज्ञानी यथार्थ से, सत्य से कोसों दूर होते है ।

उसके कंधों पर बैलों को बाँधने की मोटी रस्सी थी । वह हाथ में लेकर घूमाता हुआ महावीर की दिशा में दौडा । बैल चमक उठे । उसी समय उस वन में शांत वातावरण को चीरती हुई एक कडक चेतावनी भरे स्वर ने कहा, ''ठहरो !'' आवाज की दिशा में किसान ने गर्दन घूमाकर देखा, तो उठा हुआ हाथ अधर आकाश में ही थम गया । वह भय से कांपने लगा ।

उसने देखा एक राजसी पुरुष घोडेपर सवार हाथ में तलवार लिये उसकी ओर तेजी से आ रहा है । उसे सावधान करते हुये चेतावनी देते है, ठहर जा । चेतानेवाले आगंतुक स्वयं राजा नंदीवर्धन है ।

महावीर श्रमण बन गये, सभी का मोह छोड दिया पर नंदीवर्धन का मोह अभी छूटा नहीं है । उनकी आँखों में नींद नहीं, दिन रात एक ही विचार महावीर कहाँ होंगे ? किसी ने उन्हें कोई कष्ट तो नहीं दिया होगा । इन विचारों ने उन्हें बेचैन कर दिया । महावीर तो निर्भय है, बडे दृढ है, उनको कोई कष्ट भी दे तो उनमें अपार क्षमता है, पर मन नहीं मानता ना । इसलिए सुबह होते ही वे अकेले ही घोडे पर सवार हो महावीर के दर्शन के लिये चल दिए ।

यहाँ पहुँचते ही जो दृश्य देखा वे अवाक् रह गये। मन में पीडा हुई । रोष में आकर फटकारते हुये किसान से कहते है, ''अरे मूढ ! तू यह क्या अनर्थ कर रहा है ? नादान तू इन्हें नहीं जानता । कुछ समय पूर्व ये वैशाली के राजकुमार वर्धमान थे । अब ये श्रमण बन गये है । तेरी क्या मति मारी गई है । तुझे इस मूढकर्म की शिक्षा जरुर दी जायेगी । किसान तो भय से भूमि पर गिर पडा । हाथ जोडकर क्षमा माँगने लगा ।''

महावीर का ध्यान खुला, अंतर जगत से बाहर आये । सामने नंदीवर्धन और भयभीत किसान को देखते है । नंदीवर्धन को नमन करते है । किसान आतंकित सा कभी महावीर को, कभी नंदीवर्धन को देखता है । बार-बार भूमिपर गिरकर क्षमा माँगता है ।

महावीर कहते है, ''इसे आतंकित मत करो । इसका कोई दोष नहीं है । ये अज्ञान में है । इसे क्षमा करो, इसे जाने दो ।''

नंदीवर्धन प्रार्थना करते है कि, ''आपके साथ कुछ सैनिक रखने की मुझे आज्ञा प्रदान कीजिए ।''

महावीर कहते है, ''नंदीवर्धन सहारा लेकर आत्मसाधना नहीं होती । आत्मसाधना के लिये आत्मबल ही चाहिए । सत्य की खोज में सहारे काम नहीं आते। सत्य को खोजने के लिये तो सारे सहारे छोडने पडते है । मैंने जिस आत्म-पथ पर चलने का संकल्प किया है। वह पथ किसी के आलंबन से पाया नहीं जाता । निरालंब रहकर ही इसे पाया जा सकता है ।''

नंदीवर्धन मनाने के स्वर में कहते है, ''जनता अज्ञानी है । आप जहाँ जायेंगे वहाँ ये मूढ मिलेंगे, ये मूढ आपको तरह-तरह के कष्ट देंगे । इन्हें पता नहीं आप कौन है, आप कितनी कठोर साधना कर रहे है। मुझे चिंता होती है ।''

''नंदीवर्धन चिंता न करो । साधना के मार्गपर मूढजन कष्ट भी दे तो उनके अज्ञान को समता से सहना चाहिए । रही बात संकटों की, संकट आने पर ही आत्मबल की सही परीक्षा होती है ।''

नंदीवर्धन का भयभीत मन कहता है, - ''मेरी

प्रार्थना स्वीकारिए । आप जंगल में रहकर भी साधना करेंगे वहाँ हिंसक पशु-पक्षी आक्रमण करेंगे । नंदीवर्धन निश्चिंत रहो । पशु-पक्षियों से मुझे कोई भय नहीं । निर्भय होकर इनके साथ भी रहा जा सकता है । उन्हें अपना खाद्य मिलता है । हिंसक तब होते है जब भय और भूख सताये । वे भय के नहीं मेरे प्रेम और करुणा के पात्र होंगे ।''

किसान पश्चात्ताप करता हुआ अपने बैल लेकर घर की ओर चल दिया । नंदीवर्धन बोझिल अंत:करण से नमन कर अपने राज्य को लौट चले । महावीर आत्मसाम्राज्य की खोज में आगे बढ गये । कूर्मारगांव पास ही है । ●

१४ – आत्मनिर्भरता के सूत्र

मनुष्य हमेशा सहारा खोजता है । सहारा खोजने की यह वृत्ति भय, असुरक्षा, इच्छा की कोख से जन्म लेती है । समाज और व्यक्ती के मन में असुरक्षा की भावना भरता है । नाना प्रकार के भय, इच्छाओं को पहले भरता है फिर जगाता है । इसलिए भयभीत मनुष्य हमेशा सहारे की खोज में रहता है ।

कभी संबंधों में, कभी रुढि परंपरा में, कभी पंथ-संप्रदायों में, कभी ढोंग पाखंड में, कभी अर्थ में, कभी शब्दों में, कभी शास्त्रों में, कभी धारणा-मान्यता में सहारा लेते भटकता रहता है । ये सारे सहारे कब मनुष्य को बेसहारा कर देंगे कहा नहीं जा सकता । और यह बात निश्चित है कि इन सबमें सहारा खोजनेवाले आत्मसत्य, जीवनसत्य को तो कभी पा नहीं सकते ।

कितनी अद्‌भूत बात है कि सारी सुविधा, व्यवस्था, सहारे को नकार कर साधना के पथ पर अकेले चलना। अपना कहलाये ऐसा कोई आस-पास में नहीं । कोई वस्तु भी नहीं जिसे अपनी कहे । कंधेपर मात्र एक कपडे का टुकडा पडा है जिसका महावीर को कोई ध्यान नहीं, जिसका कोई उपयोग भी नहीं । धरती-आकाश उनके लिये सबसे बडा आधार है, संबल है ।

कूर्मारग्राम से चलते-चलते कोल्लागग्राम में पहुँचे । गाँव में तुरंत पता चला कि श्रमण महावीर आये है । एक विप्र तक यह खबर पहुँची । वह दौडा-दौडा उनके पास पहुँचा । श्रध्दा से नत हुआ, विनम्रता से अपने घरपर आने की प्रार्थना की । महावीर को दो दिन से उपवास है । अन्न-जल कुछ भी ग्रहण नहीं किया था । उस ब्राह्मण के यहाँ उन्होंने खीर ग्रहण की । विप्र का तो क्या कहना वह धन्य-धन्य हो गया । आँखों में आनंदाश्रु छलक आये ।

आज भगवान ने मेरे घर आकर खीर ली है । मैं पावन हो गया । आज मुझे सोना, चांदी, हिरे मोती सब कुछ मिल गया । गाँववालों ने कहा धन्य हो विप्रवर । आप बहुत भाग्यशाली है । इतने महान त्यागी तुम्हारे यहाँ आये आहार भी ग्रहण किया । आपका तो जन्म सुधर गया ।

विप्र ने प्रसन्नता से, हाथ जोडकर प्रार्थना की, हे श्रमण श्रेष्ठ, महान त्यागी, तपस्वी आपकी आत्मसाधना जब पूर्ण हो, आप पूर्णता को उपलब्ध हो तो, हमें भूलना नहीं । हमें सन्मार्ग बताना, यही हमारी भावना है । भगवान मौन रहे । मौन मुस्कान से अच्छा उत्तर दूसरा क्या हो सकता है ।

ठहरना, बंधना है । यह मेरा लक्ष्य नहीं है । लोग तो चाहेंगे कि मैं उनके यहाँ ठहरुँ, उनकी सुनु, कुछ सुनाऊँ, यह मेरा ध्येय नहीं, मार्ग नहीं । आत्मसाधना के मार्गपर ये बाधा बन जाते है । महावीर वहाँ से विहार कर देते है ।

मोराक सन्निवेश की ओर जा रहे है । वहाँ तपासों का आश्रम था । वहाँ के आचार्य राजा सिध्दार्थ के मित्र थे । वे महावीर को जानते है । उन्हें पता चला कि महावीर मोरक सन्निवेश की तरफ आ रहे है वे तुरंत आश्रम के द्वार पर आये । महावीर को देखते ही हार्षित

हुये, श्रध्दा से नमन करते है । परिचय की रेखा ने कही से भी प्रभावित नहीं किया । वे परिचय-अपरिचय की सीमा रेखा से बाहर हो गये है । आश्रम के संन्यासी, तापस एक राजकुमार को संन्यासी के रुप में देखकर आश्चर्यचकित हुये ।

महावीर एक दिन वहाँ ठहरे । दूसरे दिन सुबह वहाँ से चलने लगे उस समय आचार्य ने निवेदन किया वर्षावास आश्रम में ही करे । महावीर मौन है । आचार्य ने पुन: आग्रह किया बरसात के दिन अब निकट है । आप आश्रम में वर्षावास करे तो हमें बहुत प्रसन्नता होगी । महावीर ने आचार्य के आग्रह को स्वीकार कर कहा अभी वर्षावास को समय है । वर्षा के आगमन पर आश्रम में आ जाऊँगा ।

महावीर वर्षा आने से पहले निकट के कुछ गाँव में, कभी वन में कभी वृक्ष के नीचे ध्यान साधना करते रहे ।

हवाओं में, दिशाओं में, नभ में वर्षा के संकेत दिखाई देने लगे । बादलों ने आकाश में डेरा जमाना शुरु कर दिया । पंछी सुरक्षित नीड की खोज में जुट गये ।

महावीर वचन के अनुसार आश्रम में आ गये । आचार्य उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । वे प्रसन्न हुये । प्रणाम कर कहा, बडी कृपा की, आप पधारे । तुरंत एक छप्पर युक्त सुंदर कुटिया प्रदान कर प्रार्थना की, ''भंते! कुछ भी आवश्यकता हो तो इस सेवक को आज्ञा दीजिए, प्रसन्नता ही होगी ।''

महावीर घास-फूस पत्तों से छाई हुई इस कुटिया में ध्यान करने लगे । आश्रम सुंदर है । वहाँ की व्यवस्था सुंदर है । गाये रंभाती रहती, पंछी गाते रहते, वेद की ऋचाएँ हवा में गूँजती रहती ।

भरे हुये मेघ कब तक संयम रखते । उन्हें तो बरसना है । पूरी उदारता से बरसने शुरु हुये । सृष्टि में क्या ही अद्‌भूत किमया है, जो महिनों तक धरती को तपाती है, चराचर को जलाती है, वही फिर से उसे हरी-भरी, रसभरी करने के लिये बरसती भी है । और वह सतत अनंत धाराओं से सिंचन भी करती है । जिससे चराचर में पुन: नई चेतना आये । नया जीवन जागे ।

आश्रम में गोकुल भी है । अत्यधिक वर्षा से गौए आश्रम से बाहर नहीं जाती । चरने के लिये गौए आश्रम में ही घूमा करती । कुटिया घास-फूस की बनी हुई थी, निरंतर वर्षा से उनमें भी जान आ गई । कुछ हरी घास भी उग आई । गौए चरते-चरते कुटिया के पास आ जाती । छप्पर पर से घास-फूस को नीचे खींचने का प्रयास करती इधर-उधर फिरनेवाले तापस देखते तो डंडे से उन्हें भगा देते ।

महावीर हमेशा ध्यान में रहते । कभी देख भी लेते तो कुछ न करते । यह देख तापस चिड जाते । तापस आपस में चर्चा करते, अरे ! यह कैसा संन्यासी है ? अपनी कुटिया भी संभालता नहीं ? यह आलसी है गौओं को भगाता तक नहीं । वे तापस नहीं जानते अगर कुटिया ही संभालनी होती तो राजमहल क्यों छोडते ? वे कर्मों को भगाने निकले थे जो आत्मकुटिया में घुसे हुये है वे गाये क्या भगाते ?

तापस महावीर के ध्यान को आलस समझते । आपस में व्यर्थ की बातें करते । एक दिन कुछ तापस महावीर की शिकायत लेकर आचार्य के पास गये । आचार्य ने सुना ये मूढ नादान चुगली करना जानते है, महावीर जैसे त्यागी की निंदा करते है । इन मूर्खों को पता नहीं वे कितनी कठिन आत्मसाधना और तप कर रहे है । उनसे कभी किसी का भी अहित नहीं हो सकता। फिर भी आश्चर्य है, उनके बारे में शिकायत लेकर आये ।

इन मूढों को चुप करने के लिये मुझे कुछ करना होगा । मूढ और नादान को कोई उपदेश नहीं करना चाहिए । वे अपनी भूल देखने के बजाय उपहास करते है । पर जिनमें विनय विवेक है वे संकेतानुसार तुरंत

सुधार करते है ।

न आश्रम की व्यवस्था बिगडे न अशांति बढे इसलिए स्वयं आचार्य बेमन से महावीर के पास जाते है। संकोच से आचार्य नपे तुले शब्दों में बोलते है, ''भंते! ध्यान में व्यवधान के लिये क्षमा चाहता हूँ । कुटिया के प्रति उपेक्षा भाव से गौए इसे नष्ट कर रही है । तापसों में इसकी वजह से असंतोष है ।'' झुकी हुई निगाहों से आचार्य ये शब्द कह गये । बोलकर वे पछताने लगे अरे! मैं किसे घास की झोपडी संभालने के लिये कह रहा हूँ जिसने राजमहल छोड दिया । जिसके लिये दोनों में कोई अंतर नहीं है, दोनों समान है ।

महावीर मौन थे, मौन रहे । आचार्य ग्लानि से सर झुकाये चले गये । महावीर कुटिया की तरफ ध्यान दे यह कैसे हो सकता है ? वे तो अपने ध्यान में मग्न रहते। जो राजमहल में भी निरपेक्ष, अनासक्त भाव से रहे वे क्या झोपडी का ध्यान रखे ?

महावीर ने आचार्य की बात पर विचार किया । वे जो कह रहे है उचित है । मेरी झोपडी के प्रति उपेक्षा तापसों को प्रीतिकर नहीं है । मेरे कारण से उनके मन में क्षोभ हो रहा है । मेरे कारण किसी को कष्ट हो मेरे निमित्त से कोई अप्रिय बात बने, मेरा अस्तित्व खटके, अप्रिय लगे ऐसे स्थान पर रहना ठीक नहीं है ।

आत्मसाधना की इस सुदीर्घयात्रा की दृष्टि से कुछ सोचना होगा । महावीर धीरे-धीरे टहल रहे है चिंतन भी कर रहे है । घंटों ध्यान करने के बाद महावीर हमेशा तत्त्व चिंतन करते हुये टहलते रहते ।

आत्मसाधना की लंबी मंजिल अभी पार करनी है। मंजिल तय है, मार्ग स्वयं को बनाना है, खोजना है। बने-बनाये मार्गपर चलकर सत्य तो नहीं पाया जा सकता, यदि पा लिया तो उसका कोई मूल्य नहीं होता।

मनुष्य दो तरह के होते है, पहले वे जो स्वयं पर नियंत्रण करना जानते है । स्वयं अपने लिये एक मर्यादा, व्यवस्था बनाते है जिसका वे पालन करते है ।

दूसरे वे जो स्वयं पर नियंत्रण करना नहीं जानते, दूसरे के नियंत्रण में नहीं रहते और व्यवस्था मर्यादा को बार-बार तोडते है ।

महावीर चिंतन से निष्कर्ष पर पहुँचे मुझे साधना काल में कैसे रहना है -

- उस स्थान पर नहीं रहना जो अप्रीतिकर हो ।
- अधिक समय तक ध्यान में रहना ।
- साधना काल में मौन रहना ।
- आहार किसी पात्र में नहीं हाथों में ग्रहण करना।
- गृहस्थवर्ग की चापलूसी नहीं करना ।

ये नियम नहीं । ये तो संयम-साधना के सूत्र है। ये सूत्र आत्मपथ की ओर ले जानेवाले दिशादर्शक स्तंभ की तरह है । ये आत्मशांति के रहस्यमय सूत्र है । महावीर इन पाँच सूत्रों का संकल्प करते है और विचार करते है मेरे लिये यहाँ रहना अब श्रेयस्कर नहीं है ।

(क्रमश:) ●

जीवदया व गौपालन के लिए

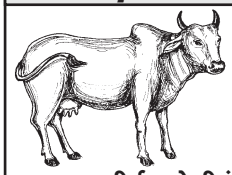

श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान

उज्ज्वल गौपालन संस्था

नवकार तीर्थ, लोणीकंद की यह गोशाला आप सभी दानवीर के सहयोग से गोवंश का अभय दान बन गयी हैं । आपके परिवार की हर खुशी में एंव विभिन्न प्रसंग पर रु. १००१/- देकर एक गोवंश को अभय दान दे। या रु. ५१००१/- देकर २१ साल की गोशाला की मिती लेकर जीवदया के इस महायज्ञ में सहयोग देकर मनःशांती पाईए।

नवकार तीर्थ, पुणे - नगर रोड, लोणीकंद, जि. पुणे.
फोन : २७०६९६९०, ९८२२९५७७८८
पुणे ऑफिस : दुग्गल प्लाझा, प्रेमनगर, बिबवेवाडी रोड, पुणे ३७. **फोन** : ६५२५७७०५, **मो.**:९८५०७१४१६४
www.jainnavkartirth.goshala.org

संस्था को दिए गए दान पर आयकर कानून कलम ८० जी के अंतर्गत इन्कमटॅक्स की छूट मिलेगी

भारत सरकार राष्ट्रीय जनगणना - २०२१
जैन बांधव जागृती अभियान

भारत सरकार दर १० वर्षांनी राष्ट्रीय जनगणना करीत असते. मागील जनगणना २०११ साली झाली व आता जनगणना २०२१ साली होणार आहे. जनगणनाची सुरवात २०२० मध्ये होणार आहे. २०११ च्या या जनगणनेत जैन धर्मियांची जनगणना फक्त ४५ लाख दाखवण्यात आली. पण वास्तव मध्ये जैन धर्मियांची लोकसंख्या या पेक्षा बरीच जास्त आहे.

जैन धर्मियांची लोकसंख्या जनगणनेत कमी येणे याला पुढील कारणे सांगता येतील.

● जनगणना प्रतिनीधी जेव्हा आपल्या घरी येतो त्यावेळी जैन धर्मियानी धर्माच्या कॉलममध्ये फक्त जैन असे लिहावे. बरेचदा समाज बांधव जैन हिंदू, हिंदू जैन, श्वेतांबर जैन, दिगंबर जैन, स्थानकवासी जैन, मंदिरमार्गी जैन इ. लिहितात.

● जनगणना प्रतिनीधी जेंव्हा फॉर्म भरतो त्यावेळेस न विचारता धर्माच्या कॉलम मध्ये हिंदू लिहितो. धर्माच्या कॉलम मध्ये काय लिहावे हे विचारले जात नाही.

● जनगणना प्रतिनीधी जेव्हा घरी येतो, त्यावेळेस जास्त करुन महिला वर्ग किंवा मुले असतात. त्यांना धर्माच्या कॉलममध्ये जैन लिहावे याची जागृती नसल्यामुळे धर्माच्या कॉलममध्ये चूकिची नोंद केली जाते.

● फॉर्म भरुन झाल्यावर त्यावर कुंटुंब प्रमुखाची सही घेतली जाते. त्यावेळी संपूर्ण फॉर्म नीट वाचून धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहिले आहे हे पाहून सही करावी.

भारत सरकार राष्ट्रीय जनगणनाला आधार मानून आपल्या विविध योजना ठरविल्या जातात. तसेच विविध राजकीय पक्षही या जनगणनेच्या आधारेच आपले उमेदवार निवड व विविध योजना अमलात आणतात. यासाठी जैनाची खरी लोकसंख्या राष्ट्रीय जनगणनेत येणे आवश्यक व महत्वाचे आहे. यासाठी जैन समाजातील नेते, आचार्य भगवंत व साधू-साध्वी यांनी या गोष्टीकडे विशेष लक्ष देऊन या संदर्भात समाज बांधवाना जागृत करुन धर्माच्या कॉलममध्ये फक्त 'जैन' लिहा असा प्रचार करावा.

जनगणनाचा फॉर्म भरुन झाल्यावर त्याचा मोबाईलवर फोटो काढून ठेवावा. – संपादक

धर्माच्या कॉलम मध्ये फक्त ''जैन'' लिहा

राष्ट्रीय जनगणना फॉर्म भरताना, शाळा प्रवेश, कॉलेज प्रवेश, जन्म दाखल्याच्या वेळी किंवा विविध फॉर्म, अर्ज भरताना त्या फॉर्ममध्ये जेथे धर्माचा कॉलम आहे, तेथे जैन बांधवानी फक्त **'जैन'** असे लिहावे.

बरेच लोक धर्माच्या कॉलमच्या पुढे श्वेतांबर जैन, दिगंबर जैन, स्थानवासी जैन, हिंदू जैन, जैन हिंदू, हिंदू, ओसवाल जैन, पोरवाल जैन इ. असे लिहितांना दिसत आहेत. असे लिहिणे चुकीचे आहे. धर्माच्या कॉलमपुढे फक्त 'जैन' लिहा. जैन धर्म हा स्वतंत्र व अती प्राचीन धर्म आहे. जैन धर्म कोणत्याही धर्माची शाखा किंवा उपशाखा नाही.

भारत सरकार व राज्य सरकार मार्फत धार्मिक अल्पसंख्याक समाजासाठी विविध सवलती दिल्या जातात. शिष्यवृत्ती, लोन, कायद्याने संरक्षण इ. सवलती आहेत. सरकारी कार्यालयातून धर्माचा दाखला मिळत नाही. जैन धर्मिय आहे हे ओळखण्यासाठी शाळेच्या लिव्हिग सर्टिफिकेट मध्ये धर्माच्या कॉलममध्ये 'जैन' लिहिणे आवश्यक आहे. धर्माच्या कॉलममध्ये 'जैन' लिहिले आहे का ? हे तपासा.

जैन बांधवानी कोणताही फार्म भरताना धर्माच्या कॉलममध्ये फक्त 'जैन' लिहा. – संपादक

कव्हर तपशील - जानेवारी २०२०

❖ **एन्डोस्कोपी ऑन व्हिल्स – उद्घाटन**

१० डिसेंबर २०१९ रोजी विधान मंडळाच्या प्रांगणात महाराष्ट्र शासन आणि बलदोटा इन्स्टिट्यूट ऑफ डायजेस्टीव्ह सायन्स यांच्या संयुक्त विद्यमाने सुरु करण्यात आलेल्या 'एन्डोस्कोपी ऑन व्हिल्स' म्हणजेच फिरत्या पोटविकार केंद्राचे उद्घाटन मुख्यमंत्री उध्दव ठाकरे यांनी केले. यावेळी सोबत ग्लोबल रुग्णालयाचे संचालक डॉ. अमित मायदेव, श्री. नरेंद्रजी बलदोटा इ. मान्यवर.

❖ **एक धैर्यशील योध्दा महात्मा गांधी – पुस्तक प्रकाशन**

पुणे : गांधी विचारांचे युवा अभ्यासक श्री. संकेत मुनोत यांनी संकलित केलेल्या 'एक धैर्यशील योध्दा : महात्मा गांधी' या पुस्तकाच्या तिसऱ्या आवृत्तीचे अनावरण विश्वसंत ध्यानयोगी आचार्य डॉ. शिवमुनीजी महाराज साहेब यांच्या हस्ते झाले. यावेळी सोबत श्री. संकेत मुनोत, श्री. विजयकांतजी कोठारी, श्री. पोपटशेठ ओस्तवाल, श्री. विजय भंडारी, श्री. पन्नालालजी लुणावत, श्री. संजय चोरडिया, श्री. दिपक मुनोत, श्री. वालचंदजी संचेती इ.

❖ **आर. एम. धारीवाल फाऊंडेशन – शिष्यवृत्ती**

माणिकचंद हाऊस, पुणे येथे ८८८ विद्यार्थ्यांना शिष्यवृत्ती वाटप करण्यात आले. दरवर्षी रुपये एक कोटी एवढी रक्कम शिष्यवृत्तीसाठी मंजूर करण्यात येते. कार्यक्रमास आर. एम. धारीवाल फाऊंडेशनच्या उपाध्यक्षा श्रीमती शोभा आर. धारीवाल, पुण्य नगरीचे महापौर श्री. मुरलीधर मोहळ, इंद्राणी बालन फाऊंडेशन व एस बालन समुहाचे अध्यक्ष श्री. पुनीत बालन, आर. एम. धारीवाल फाऊंडेशनच्या अध्यक्षा जान्हवी आर. धारीवाल व काँग्रेस जिल्हा कमिटी माजी अध्यक्ष श्री. देवीदासजी भन्साळी, भंडारी उद्योग समूहाचे अध्यक्ष श्री. विजय भंडारी आदी उपस्थित होते.

❖ **आर. एम. धारीवाल फाऊंडेशन – मॅरेथॉन**

आर.एम. धारीवाल फाऊंडेशन पुणे व महागणपती फाऊंडेशन रांजणगाव यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजीत केलेल्या भव्य मॅरेथॉन स्पर्धेत ५ हजार स्पर्धकांनी सहभाग घेतला. या वेळी शोभाताई धारीवाल (उपाध्यक्ष, आर.एम. धारीवाल फाऊंडेशन), श्री. रोहित पवार (आमदार, कर्जत-जामखेड), श्री. युसूफ पठाण, श्री. पुनीत बालन, जान्हवी रसिकलालजी धारीवाल इ. अनेक मान्यवर व रांजणगाव गणपतीचे ग्रामस्थ उपस्थित होते.

❖ **भगवान महावीर सेवा धाम ट्रस्ट, कोल्हापूर**

कोल्हापूर – भगवान महावीर सेवा धाम ट्रस्टच्या सेवार्थ रुग्णालय आणि प्रयोगशाळेचे कसबा गेट येथील नवीन वास्तूत प्रवेश समारंभ आचार्यश्री रत्नाकर सुरीश्वरजी महाराज यांच्या उपस्थितीत पार पडला. यावेळी रतनचंद दिलीपकुमार कटारिया यांच्या हस्ते रुग्णालयाचे उद्घाटन झाले. कलश स्थापना साकलचंद दौलाजी गांधी आणि कुंकमथापा समारंभ श्रीमती झम्बुवती प्रतापचंद

निंबजिया यांच्या हस्ते झाले. अध्यक्ष विनोद ओसवाल, उपाध्यक्ष संजय गांधी इ. अनेक मान्यवर उपस्थित होते.

❖ **अरिहंत जागृती मंच – जनगणना निवेदन**

सन २०२१ च्या जनगणनेसाठी नोंद करताना नागरिकांकडून दिल्या जाणाऱ्या माहितीचीच नोंद करावी. त्यात बदल करुन नोंद करु नये. अशी सूचना आणि प्रशिक्षण संबंधित कर्मचाऱ्यांना देण्यात यावे, असे निवेदन अल्पसंख्याक हक्क दिन १८ डिसेंबर २०१९ रोजी अरिहंत जागृती मंच, पुणे तर्फे देण्यात आले. महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त, भारत सरकार, नवी दिल्ली यांना पुणे जिल्हाधिकारी कार्यालया द्वारा द्यावयाचे निवेदन निवासी उपजिल्हाधिकारी जयश्री कटारे यांनी स्वीकारले. यावेळी अरिहंत जागृती मंचचे राजेंद्र सुराणा, श्रीपाल ललवाणी, विजय पारख, शांतीलाल नवलाखा, संतोष भन्साळी, सम्यक ललवाणी उपस्थित होते.

❖ **डॉ. दिलीप धींग – पुरस्कार**

चेन्नई : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्रचे निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग यांना ८ डिसेंबर रोजी कोलकाता येथे आचार्य नानेश स्मृति सम्मान – २०१९ से सम्मानित करण्यात आले. मेघालयचे राज्यपाल तथागत राय, पूर्व राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी, अजित चोरडिया या मान्यवरांच्या हस्ते देण्यात आले.

❖ **सूर्यदत्ता ग्रुप, पुणे – पुरस्कार**

माय ब्रँड बेटर आयोजित 'इंडियन एक्सलन्स इन एज्युकेशन अवॉर्डस् २०१९' मध्ये सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्युटला' बेस्ट इन्स्टिट्युटशनल ग्रुप इन महाराष्ट्र' पुरस्काराने सन्मानित करण्यात आले. नवी दिल्ली येथे नुकत्याच झालेल्या पुरस्कार वितरण सोहळ्यात ज्येष्ठ अभिनेत्री पूनम धिल्लन यांच्या हस्ते सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्युटच्या उपाध्यक्षा सुषमा चोरडिया यांनी हा सन्मान स्वीकारला.

❖ **जैन समाज गौरव – श्री. चकोरजी गांधी**

जैन समाज गौरव श्री. चकोरजी गांधी यांची मुलाखत या अंकात पान ३७ वर दिली आहे.

❖ **पार्श्वनाथ युवक मंडळ, कासारवाडी**

पार्श्वनाथ युवक मंडळाच्या वतीने स्वर्गीय प्रा. प्रकाश पगारिया यांच्या ३६ व्या स्मृतिदिनानिमित्त आयोजित शिबिराचे उद्घाटन महापौर माई ढोरे यांच्या हस्ते झाले. यावेळी साध्वी दर्शन प्रभाजी, अनुपमाजी, विरतिसाधनाजी, जिनेश्वराजी, नगरसेवक श्याम लांडे, सुरेश गदिया, जैन कॉन्फरन्सचे राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रा. अशोककुमार पगारिया, प्रा. प्रकाश कटारिया, सुभाष ललवाणी, विलास पगारिया, नयन भंडारी, महावीर कुवाड, डॉ. जवाहर भळगट, जवाहरलाल भंडारी आदी मान्यवर उपस्थित होते.

❖ **श्री. संजयजी बोरा, भोसरी**

भोसरी, पुणे येथील पत्रकार श्री. संजयकुमार पोपटलालजी बोरा यांची पिंपरी-चिंचवड शहर पत्रकार संघ सरचिटणीस पदी निवड झाल्याबद्दल अभिनंदन करताना मराठी पत्रकार संघाचे अध्यक्ष एस. एम. देशमुख, विभागीय सचिव बापुसाहेब गोरे, विश्वस्त शरद पाबळे, पुणे जिल्हा अध्यक्ष सुनिल लोणकर, शहर अध्यक्ष अनिल वडगुले आदि मान्यवर. ●

जैन समाजात सर्वांत जास्त खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति